भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 928
उत्तर देने की तारीख 02.12.2024

भारतीय संरक्षण अध्येता कार्यक्रम

928. डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे :
श्री नरेश गणपत म्हस्के :
श्रीमती शांभवी :

क्या संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने ग्रामीण और पारंपरिक क्षेत्रों में सांस्कृतिक परंपरा और साहित्य को बढ़ावा देने के लिए कोई उपाय किया है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ख) भारतीय संरक्षण अध्येता कार्यक्रम (आईसीएफपी) का ब्यौरा क्या है;

(ग) अब शास्त्रीय भाषा के रूप में मान्यताप्राप्त प्रत्येक भाषा के भाषाई और सांस्कृतिक महत्व का ब्यौरा क्या है; और

(घ) इन भाषाओं में प्राचीन ग्रंथों के दस्तावेज़ीकरण और डिजिटलीकरण को सुनिश्चित करने के लिए क्या विशिष्ट उपाय किए जा रहे हैं?

उत्तर

संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री
(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क) और (ख): भारत सरकार, पूरे देश में भारतीय संस्कृति और साहित्य को सक्रिय रूप से बढ़ावा देती है।

संस्कृति मंत्रालय, अपने स्वायत्त निकायों के माध्यम से ग्रामीण और पारंपरिक क्षेत्रों में सांस्कृतिक परंपरा और साहित्य को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न उपाए हैं कि जो निम्नलिखित हैं:

साहित्य अकादमी (एसए) 24 मान्यताप्राप्त भाषाओं में भारतीय साहित्य को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

साहित्य अकादमी ने, अपने नियमित कार्यक्रमों और प्रकाशनों के अलावा साहित्यिक जागरूकता और प्रतिभा को बढ़ावा देने हेतु कतिपय परियोजनाएं और स्कीमें आरंभ की हैं, विशेषकर ग्रामीण और पारंपरिक क्षेत्रों में। इनमें से 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' और 'ग्रामालोक' श्रृंखला उल्लेखनीय है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (आईजीएनसीए) सांस्कृतिक परिरक्षण और क्षेत्रीय भाषाओं के प्रलेखन, सवंर्धन, मंच कलाओं को बढ़ावा देने और पारंपरिक कला रूपों के विकास पर ध्यान केन्द्रित करता है।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र (सीसीआरटी) ग्रामीण और पारंपरिक क्षेत्रों में सांस्कृतिक परंपरा और साहित्य को बढ़ावा देने के लिए सांस्कृतिक प्रतिभा खोज छात्रवृत्ति स्कीम, "विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों में युवा कलाकारों को छात्रवृत्ति प्रदान करना (एसवाईए)" स्कीम, संस्कृति के क्षेत्र में उत्कृष्ट व्यक्तियों को छात्रवृत्ति प्रदान करने हेतु छात्रवृत्ति स्कीम जैसी छात्रवृत्ति एवं अध्येतावृत्ति स्कीमें कार्यान्वित करता है।

संस्कृति मंत्रालय द्वारा मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट (एमएमए), न्यूयॉर्क और स्टिचटिंग रेस्टोरैटी एटेलियर लिम्बर्ग (एसआरएएल), मास्ट्रिच, नीदरलैंड के सहयोग से भारतीय संरक्षण फेलोशिप प्रारंभिक कार्यक्रम (आईसीएफपीपी) की शुरुआत की गई। संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार और मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट (एमएमए), न्यूयॉर्क के बीच 19.03.2013 को दो वर्ष की अवधि के लिए सहमति ज्ञापन (एमओए) पर हस्ताक्षर किए गए थे।

तत्पश्चात, संस्कृति मंत्रालय और मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट (एमएमए), न्यूयॉर्क के बीच 2016 से 2021 तक की अवधि के लिए भारतीय संरक्षण फेलोशिप कार्यक्रम (आईसीएफपी) की शुरुआत करने के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। संस्कृति मंत्रालय द्वारा इसकी शुरुआत मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट (एमएमए), न्यूयॉर्क और स्टिचटिंग रेस्टोरैटी एटेलियर लिम्बर्ग (एसआरएएल), मास्ट्रिच, नीदरलैंड, द रॉयल इंस्टीट्यूट फॉर कल्चरल हैरिटेज, ब्रसेल्स ("केआईके-आईआरपीए") और द फ्रीयर गैलरी ऑफ आर्ट एंड आर्थर एम. सैकलर गैलरी, एंड्रू डब्ल्यू. मैलन फाउंडेशन ("मैलन फाउंडेशन") की सहायता से द स्मिथसोनियन म्यूजियम ऑफ एशियन आर्ट, वॉशिंगटन, डीसी ("एफजी") के समन्वयन में की जानी थी।

इस अध्येतावृत्ति का उद्देश्य सहभागियों को अपनी गृह संस्थाओं के संग्रहों की बेहतर देखरेख हेतु कौशल प्रदान करना और क्षेत्र विशेष के व्यावसायिकों से अंतरराष्ट्रीय संबंधों सहित भारत में वृहत्तर और अधिक सुदृढ़ संरक्षण समुदाय स्थापित करना था। अब तक भारत के 36 संरक्षकों (17 संरक्षकों को प्रारंभिक कार्यक्रम के दौरान और 19 संरक्षकों को मुख्य कार्यक्रम के दौरान) को आईसीएफपी फेलोशिप प्राप्त हुई है।

(ग): भारत सरकार ने निम्नलिखित 11 भाषाओं को प्राचीन भाषाओं के रूप में मान्यता प्रदान की है: तमिल, तेलुगु, संस्कृत, कन्नड़, मलयालम, ओड़िया, मराठी, पाली, प्राकृत, असमिया

और बांग्ला। इनमें से प्रत्येक भाषा का कम से कम 1500 वर्ष पुराना इतिहास है, जो समृद्ध सांस्कृतिक और धरोहर का प्रतिनिधित्व करती है। ये अपने संबंधित समुदायों और क्षेत्रों के अनूठेपन को दर्शाती हैं। इन भाषाओं में प्राचीन साहित्य और ग्रंथों का विशाल संग्रह सम्मिलित है, जिन्हें इन भाषाओं को बोलने वाली कई पीढ़ियों द्वारा मूल्यवान धरोहर माना जाता है। इनमें विशेषकर गद्य के साथ-साथ काव्य सहित ज्ञान संबंधी पाठ, पुरालेखीय और उत्कीर्णित प्रमाण भी मौजूद हैं जो उनके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व को प्रदर्शित करते हैं।

(घ): इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (आईजीएनसीए) ने क्षेत्रीय भाषाओं, पारंपरिक कला रूपों और मंच कलाओं के लिए डिजिटल अभिलेखागार सृजित किए हैं। डिजिटल संग्रहालय क्षेत्रीय कला एवं संस्कृति को प्रदर्शित करने के लिए सृजित किए गए हैं और आईजीएनसीए के कल्चर इनफार्मेटिक्स लेब (सीआईएल) प्रभाग के राष्ट्रीय सांस्कृतिक दृश्य-श्रव्य अभिलेखागार (एनसीएए) के माध्यम से विभिन्न कार्यकलाप किए जाते हैं। संस्कृति मंत्रालय के अधीन राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन (एनएमएम) भी इन भाषाओं के प्राचीन ग्रंथों के प्रलेखन और डिजिटलीकरण में कार्यरत है।

*****